IIMA PRESS RELEASE 2013-14

'Open Day' for school children at IIMA meets with enthusiasm

IIMA, February 2, 2014: The Indian Institute of Management, Ahmedabad (IIMA) organised an Open Day for School Children today with a larger objective to connect and engage with the local community. Over 600 students from various schools across Ahmedabad made their way to the Ravi J Matthai auditorium at the IIMA for a one of its kind 'Open Day at IIMA'. Despite it being a Sunday morning and there being diversions, owing to a cyclothon in the city, the students from grades 8 to 12 , representing nearly 20 schools came with great enthusiasm to find out exactly how things are in a premium institute right in their neighbourhood. The event was steered by students and faculty of IIMA to give the attendees a peek into life at IIMA and inspire school children through experience sharing and discussions. The Director of IIMA, Prof. Ashish Nanda, Deans, Prof. Ajay Pandey and Prof. Arvind Sahay also interacted with the school children.

Prof. Anil Gupta, Faculty, IIMA addressed the students, inviting them to ideate and be thinkers. He urged the children to come up with an innovative idea that would help make the community better, and the students were given some time to put their ideas on paper. The three best entries received an autographed copy of 'Ignited Minds' by Dr. A.P.J Abdul Kalam. The best entries received a Letter of Invitation from the National Innovation Foundation to attend a session by Dr. Kalam.

A panel discussion followed, which included current students of IIMA throwing light on their lives before IIMA, inside IIMA – the academic rigour and the extra-curricular activities, and what they expected from their lives once they graduated from IIMA. The discussions ranged from their lives in Engineering school, their passions and how they got to explore them at IIMA and how their lives have changed since they came here. The school students asked insightful questions in the Q&A, some prominent ones being – 'What is it that you think one should not take away from IIMA'. The question was met with great applause from the audience, and one of the panellists on the dais, Vishnu Kaant Pitty, replied by saying that once you get into the rigour of deadlines and commitments, it is very easy to become mechanical in life. A painter by passion, he urged student not to let the creative spirit in them wane and that was his biggest 'non-takeaway' from IIMA. Prof. Pandey answered by saying that the one thing nobody should ever take from IIMA is arrogance. Another very interesting question posed by the audience was, if IIMA is the best place for ideas, then why does everyone seem to be targeting placements only and not enough entrepreneurs are produced by the Institute. The General Secretary of IIMA, G. Ramachandran, himself being someone who has dabbled in entrepreneurship, replied that it was a matter of choice. Someone might want to head their own business or lead an existing business that is close to their hearts. Prof. Sahay added that IIMA gives its students the tools and techniques to manage a business and the opportunity to apply them would always be there.

The school children has more excitement waiting as they joined for a photo-session with the Director Prof. Ashish Nanda at the Harvard steps and were later taken on a campus walk. Prof. Nanda in his address thanked everyone for showing remarkable energy and mentioned that the best gift the students could give was the gift of time and energy, especially on a Sunday morning.

आईआईएमए प्रेस विज्ञप्ति 2013-14

आईआईएमए में स्कूली बच्चों के लिए 'मुक्त दिवस' उत्साहपूर्ण रहा

आईआईएमए, 2 फरवरी, 2014 : भारतीय प्रबंध संस्थान-अहमदाबाद (आईआईएमए) ने स्थानीय समुदाय के साथ जुड़ने तथा संलग्न होने के व्यापक उद्देश्य के साथ आज स्कूली बच्चों के लिए 'ऑपन डे - मुक्त दिवस' का आयोजन किया था। अहमदाबाद के विभिन्न स्कूलों से 600 से अधिक बच्चे एक अलग तरह के ऐसे आयोजन 'आईआईएमए में मुक्त दिवस' में रवि जे. मथाई सभागृह में एकत्रित हुए। रविवार होने और शहर में सायक्लॉथॉन के आयोजन के कारण काफी मार्ग परिवर्तनों के बावजूद, लगभग 20 स्कूलों के 8 से 12वीं कक्षा तक के छात्र बड़े उत्साह के साथ कैम्पस में यह पता लगाने आए कि अहमदाबाद शहर के आंचल में फैले श्रेष्ठ संस्थान में वास्तव में कैसे सब कुछ अच्छी तरह से अंजाम दिया जाता है। उपस्थित आगंतुकों को आईआईएमए की झांकी देने के लिए इस समारोह की शुरूआत आईआईएमए के छात्रों एवं संकायों द्वारा की गई और अनुभवों को साझा करते हुए चर्चा के साथ स्कूली बच्चों को प्रेरित किया गया। आईआईएमए के निदेशक, प्रोफ़ेसर आशीष नंदा, डीन प्रोफ़ेसर अजय पांडेय एवं डीन प्रोफ़ेसर अरविंद सहाय ने भी इन बच्चों के साथ बातचीत की।

प्रोफ़ेसर अनिल गुप्ता, संकाय, आईआईएमए, ने इन छात्रों का स्वागत करते हुए चिंतन करने एवं सोचने के प्रति प्रेरित करते हुए संबोधन किया। उन्होंने बच्चों को समुदाय को बेहतर बनाने में सहायता करने करने के ऐसे अभिनव विचारों के साथ आगे बढ़ने के लिए कहा, और बच्चों को अपने विचार एक कागज पर लिखने के लिये कहा। इनमें से तीन सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा हस्ताक्षरित 'प्रज्ज्वलित मन(इग्नाइटेड माइंड्स)' की प्रति प्रदान की गई। इन सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को डॉ. कलाम द्वारा दिये जाने वाले एक सत्र में शामिल होने के लिए राष्ट्रीय नवाचार प्रतिष्ठान द्वारा आमंत्रण दिया गया।

उसके बाद एक पैनल चर्चा की गई, जिसमें आईआईएमए के वर्तमान छात्रों ने आईआईएमए में आने से पहले के अपने जीवन, अब आईआईएमए के अंदर - शैक्षणिक कठिनाई एवं पाठ्येतर गतिविधियों, और आईआईएमए से स्नातक होने के बाद के अपने जीवन की उम्मीदों पर प्रकाश डाला। उनके इंजीनियरिंग स्कूली जीवन से लेकर आईआईएमए में कैसे आए तथा यहाँ आने के बाद कैसे उनका जीवन बदल गया उस बारे में विचार विमर्श हुआ। प्रश्नोत्तरी के दौरान, स्कूली बच्चों ने व्यावहारिक प्रश्न पूछे, जिनमें कुछ इस तरह के विशिष्ट प्रश्न थे - 'वह क्या चीज़ है जिसे आप आईआईएमए से लेकर नहीं जायेंगे'। इस प्रश्न को दर्शकों से तालियों के साथ बहुत वाहवाही मिली और मंचस्थ महानुभावों में से एक, विष्णु कान्त पिट्टी ने उत्तर में बताया कि जब आप एक बार कठोर समय सीमाओं एवं प्रतिबद्धताओं से जुड़ जाते हैं तो बाद के जीवन में यांत्रिक बन जाना सरल हो जाता है। जुनून से भरा एक चित्रकार छात्रों में कभी रचनात्मक भावना को कम नहीं होने देने का आग्रह रखेगा और ठीक वैसे ही छात्र इस भावना को आईआईएमए से दूर नहीं ले जायेंगे। इस पर प्रोफ़ेसर पांडेय ने उत्तर देते हुए कहा कि कोई भी छात्र आईआईएमए से अहंकार लेकर नहीं जाना चाहिए। दर्शकों में से एक और रोचक प्रश्न पूछा गया, यदि आईआईएमए विचारों के लिए श्रेष्ठ स्थान माना जाता है तो यहाँ के छात्र क्यों केवल नियुक्तियों को ही अपना लक्ष्य रखते हैं और स्थान द्वारा क्यों पर्याप्त रूप से उद्यमी तैयार नहीं किये जाते। आईआईएमए के महासचिव जी. रामचन्द्रन्, जिन्होंने स्वयं को

थोड़ा उद्यमिता में लिप्त रखा है, जवाब में कहा कि, यह तो अपनी अपनी पसंद की बात है। कोई अपने स्वयं के व्यवसाय का प्रमुख बनना चाहेगा या मौजूद व्यवसाय का अग्रणी बनना चाहेगा जो उन्हें पसंद होगा वही करेंगे। प्रोफ़ेसर सहाय ने कहा कि आईआईएमए अपने छात्रों को उनके व्यवसाय का प्रबंधन करने के लिए उपकरण एवं तकनीकों तथा उनको लागू करने के लिए हमेशा अवसर प्रदान करता है।

हार्वर्ड स्टैप्स पर निदेशक प्रोफ़ेसर आशीष नंदा के साथ एक फोटो-सत्र के लिए प्रतीक्षारत इन छात्रों में काफी उत्साह दिखाई दिया और उसके बाद उन्हें परिसर की सैर के लिए ले जाया गया। प्रोफ़ेसर नंदा ने अपने संबोधन में प्रत्येक छात्र को उनके उल्लेखनीय उत्साह के लिए धन्यवाद दिया और बताया कि यदि कोई श्रेष्ठ उपहार वे दे सकते थे तो वह था विशेष रूप से रविवार की सुबह उनका समय एवं उनकी उर्जा।